IJIRSET
International Journal of Innovative Research in
SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

e-ISSN: 2319-8753 | p-ISSN: 2347-6710

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

Volume 11, Issue 12, December 2022

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 8.118

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

|| Volume 11, Issue 12, December 2022 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1112085 |

जोधपुर की ऐतिहासिक धरोहर

Harimohan Meena

Research Scholar, PhD History, Govt. Dungar College, Bikaner, MGSU Bikaner, Rajasthan, India

सार

मेहरानगढ़ का किला पहाड़ी के बिल्कुल ऊपर बसे होने के कारण राजस्थान के सबसे खूबसूरत किलों में से एक है। इस किला के सौंदर्य को श्रृंखलाबद्ध रूप से बने द्वार और भी बढ़ाते हैं। इन्हीं द्वारों में से एक है-जयपोल। इसका निर्माण राजा मानसिंह ने 1806 ईस्वी में करवाया था। दूसरे द्वार का नाम है-विजयद्वार। इसका निर्माण राजा अजीत सिंह ने मुगलों पर विजय के उपलक्ष्य में किया था। किले के अंदर में भी पर्यटकों को देखने हेतु कई महत्वपूर्ण इमारतें हैं। जैसे मोती महल, सुख महल, फूलमहल आदि-आदि।

125 मीटर ऊँची पहाड़ी पर स्थित पांच किलोमीटर लंबा भव्य किला बहुत ही प्रभावशाली और विकट इमारतों में से एक है। बाहर से अदृश्य, घुमावदार सड़कों से जुड़े इस किले के चार द्वार हैं। किले के अंदर कई भव्य महल, अद्भुत नक्काशीदार किवाड़, जालीदार खिड़कियाँ और प्रेरित करने वाले नाम हैं। इनमें से उल्लेखनीय हैं मोती महल, फूल महल, शीश महल, सिलेह खाना, दौलत खाना। इन महलों में भारतीय राजवेशों के साज सामान का विस्मयकारी संग्रह निहित है। इसके अतिरिक्त पालकियाँ, हाथियों के हौदे, विभिन्न शैलियों के लघु चित्रों, संगीत वाद्य, पोशाकों व फर्नीचर का आश्चर्यजनक संग्रह भी है।

परिचय

जोधपुर
Jodhpur
सूर्यनगरी, जोधाणा

जसवंत थाड़ा

यह पूरी तरह से मार्बल निर्मित है। इसका निर्माण 1899 में राजा जसवंत सिंह (द्वितीय) और उनके सैनिकों की याद में किया गया था।[1,2] इसकी कलाकृति आज भी पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करता है। महाराजा जसवंत सिंह द्वितीय की याद में सफेद संगमरमर से ईसवी सन् 1899 में निर्मित यह शाही स्मारकों का समूह है। मुख्य स्मारक के अंदर जोधपुर के विभिन्न शासकों के चित्र हैं। एक छठ

उम्मैद महल

महाराजा उम्मैद सिंह ने इस महल का निर्माण सन 1943 में किया था। मार्बल और बालूका पत्थर से बने इस महल का दृश्य पर्यटकों को खासतौर पर लुभाता है। इस महल के संग्रहालय में पुरातन युग की घड़ियां और पेंटिंग्स भी संरक्षित हैं। यहीं एक ऐसा

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

|| Volume 11, Issue 12, December 2022 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1112085 |

बीसवीं सदी का महल है जो बाढ़ राहत परियोजना के अंतर्गत निर्मित हुआ। जिसके कारण बाढ़ से पीड़ित जनता को रोजगार प्राप्त हुआ। यह महल सोलह वर्ष में बनकर तैयार हुआ। बलुआ पत्थर से बना यह अतिसमृद्ध भवन अभी पूर्व शासकों का निवास स्थान है जिसके एक हिस्से में होटल चलता है और बाकी के हिस्से में संग्राहालय।[3,4]

गिरडीकोट और सरदार मार्केट

छोटी छोटी दुकानों वाली, संकरी गलियों में छितरा रंगीन बाजार शहर के बीचों बीच है और हस्तशिल्प की विस्तृत किस्मों की वस्तुओं के लिए प्रसिद्ध है तथा खरीददारों का मनपसंद स्थल है।

मेहरानगढ़ का किला विशाल परिसर, दिवारों पर जटिल नक्काशी, बलुआ पत्थर के बने शाही हॉल और अंदर राजसी सजावट मेहरानगढ किले को देश का सबसे बेहतरीन किला बनाती है। यह किले की वास्तुकला शाही राजपूत संस्कृति की याद ताजा कराती है। किला चारो ओर विशाल दिवारों से घिरा है जो एक ऊंची पहाड़ी पर स्थित है यहां से पूरा शहर दिखाई देता है। किले में मौजूद संग्रहालय आपको शानदार अतीत की कहानी बताएगा। संग्रहालय में शाही पालकी, तलवारें, चित्र और पुराने संगीत वाद्ययंत्र प्रदर्शन के लिए रखे हुए हैं। किले के जिस हिस्से में तोप रखी है वह किले का सबसे उच्चतम स्थान है यहां से सूर्यास्त के शानदार नजारे के साथ जोधपुर शहर के नीले मकानों का दृश्य भी दिखाई देता है। किले को छोड़ने से पहले किले की छत पर बने चोकेलाओ रेस्तरां में जरूर जाएं जहां पारंपारिक राजस्थानी थाली मिलती है।

मंडोर गार्डन मंडोर गार्डन एक धरोहर स्थल है जो ऐतिहासिक होने के साथ शहर की प्राकृतिक खूबसूरती को भी बढ़ाता है। यहां प्रत्येक पर्यटक को जरूर जाना चाहिए। इसे छठी शताब्दी में बनाया गया था। जोधपुर से पहले मंडोर, मारवाड़ की राजधानी थी। मंडोर गार्डन जोधपुर से उत्तर दिशा में 9 किलोमीटर दूर है। यहां एक सरकारी संग्रहालय और मंदिर है। पत्थर की बनी छत के कारण वास्तुकला का यह अदभुत नमूना लोगों को आकर्षित करता है इसके साथ ही जोधपुर के शासकों की गहरे लाल रंग की छतरियां और शानदार ग्रीन गार्डन भी है जिसमें पेड़ो-पौधों की अनगिनत प्रजातियां हैं। लाल पत्थर से बनी इस संरचना की सबसे अनोखी चीज महाराज अजीत सिंह की छतरी है जो देखने में काफी खूबसूरत है। अगर आप जोधपुर जाएं तो इसे देखना बिल्कुल भी न भूलें[5,6]

राव जोधा डेज़र्ट रॉक पार्क मेहरानगढ़ किले के पास स्थित राव जोधा डेज़र्ट पार्क एक दशक से ज्यादा पुराना नहीं है पार्क पर्यटकों के प्रमुख आकर्षणों में शामिल है यहां एक कैफे भी है। पार्क में पर्यटक अब 'बावीला' को छोड़कर कई तरह के अन्य पेड़-पौधे देख सकते हैं। अगर आप जोधपुर के पारंपारिक घूमने के स्थानों के अलावा कुछ और देखना चाहते हैं यह पार्क आपके लिए ही है।

कायलाना झील कायलाना झील इस ऐतिहासिक शहर की खूबसूरती को और बढ़ा देती है। यह झील शहर के केन्द्र से 10 किलोमीटर पश्चिम में स्थित है। इस झील का निर्माण सन 1872 में प्रताप सिंह ने करवाया था। कृत्रिम झील और इसके आसपास का इलाका पक्षी प्रेमियों के लिए स्वर्ग के समान है इसलिए राजस्थान की झीलों में सबसे ज्यादा पर्यटक इसी झील को देखने आते हैं।

विचार-विमर्श

जोधपुर सुनें राजस्थान का दूसरा सबसे बड़ा नगर है। राव जोधा ने 12 मई, 1459 ई. में आधुनिक जोधपुर शहर की स्थापना की। इसकी जनसंख्या १० लाख के पार हो जाने के बाद इसे राजस्थान का दूसरा "महानगर" घोषित कर दिया गया था। यह यहां के ऐतिहासिक रजवाड़े मारवाड़ की इसी नाम की राजधानी भी हुआ करता था। जोधपुर थार के रेगिस्तान के बीच अपने ढेरों शानदार महलों, दुर्गों और मन्दिरों वाला प्रसिद्ध पर्यटन स्थल भी है।[7,8]

वर्ष पर्यन्त चमकते सूर्य वाले मौसम के कारण इसे "सूर्य नगरी" भी कहा जाता है। यहां स्थित मेहरानगढ़ दुर्ग को घेरे हुए हजारों नीले मकानों के कारण इसे "नीली नगरी" के नाम से भी जाना जाता था। यहां के पुराने शहर का अधिकांश भाग इस दुर्ग को घेरे हुए बसा है, जिसकी प्रहरी दीवार में कई द्वार बने हुए हैं, हालांकि पिछले कुछ दशकों में इस दीवार के बाहर भी नगर का वृहत प्रसार हुआ है। जोधपुर की भौगोलिक स्थिति राजस्थान के भौगोलिक केन्द्र के निकट ही है, जिसके कारण ये नगर पर्यटकों के लिये राज्य भर में भ्रमण के लिये उपयुक्त आधार केन्द्र का कार्य करता है।

वर्ष २०१४ के विश्व के अति विशेष आवास स्थानों (मोस्ट एक्स्ट्रा ऑर्डिनरी प्लेसेज़ ऑफ़ द वर्ल्ड) की सूची में प्रथम स्थान पाया था। एक तमिल सिनेमा, आई, जो कि अब तक की भारतीय सिनेमा की सबसे महंगी सिनेमा शोगी, की शूटिंग भी यहां हुई थी. सूर्य नगरी के नाम से प्रसिद्ध जोधपुर शहर की पहचान यहां के महलों और पुराने घरों में लगे छितर के पत्थरों से होती है, पन्द्रहवी शताब्दी का विशालकाय मेहरानगढ़ दुर्ग, पथरीली चट्टान पहाड़ी पर, मैदान से १२५ मीटर ऊंचाई पर विद्यमान है। आठ द्वारों व अनगिनत बुर्जों से युक्त यह शहर दस किलोमीटर लंबी ऊंची दीवार से घिरा है।[9,10]

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

|| Volume 11, Issue 12, December 2022 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1112085 |

सोलहवीं शताब्दी का मुख्य व्यापार केन्द्र, किलों का शहर जोधपुर, अब राजस्थान का दूसरा विशालतम शहर है। पूरे शहर में बिखरे वैभवशाली महल, किले और मंदिर, एक तरफ जहां ऐतिहासिक गौरव को जीवंत करते हैं वही दूसरी ओर उत्कृष्ट हस्तकलाएं लोक नृत्य, संगीत और प्रफुल्ल लोग शहर में रंगीन समां बांध देते हैं।

जोधपुर शहर के लोग बहुत मिलनसार होते है, ये सदैव दुसरों की मदद के लिये ततपर रहते है, उलझी हुई घुमावदार गलियाँ पटरियों पर लगी दुकानों से घिरी हैं। कलात्मक रूप से बनी हुई रंगबिरंगी पोशाकें पहने हुए लोगों को देखकर प्रतीत होता हैं कि जोधपुर की जीवनशैली असाधारण रूप से सम्मोहित करने वाली है। औरतें घेरदार लहंगा और आगे व पीछे के हिस्सों को ढकने वाली तीन चौथाई लंबाई की बांह वाली नितम्ब स्थल तक की जैकेट पहनती हैं। पुरुषों द्वारा पहनी हुई रंगीन पगड़ियाँ शहर में ओर भी रंग बिखेर देती हैं। आमतौर से पहने जाने वाली ढ़ीली ढ़ाली और कसी, घुड़सवारी की पैंट जोधपुरी ने यहीं से अपना नाम पाया। जोधपुर के कपडो मैं जोधपुरी कोट और जोधपुरी पगड़ी पूरे भारत में प्रसिद्ध है।[11,12]

राजस्थान में जोधपुर शिक्षा के क्षेत्र में बहुत आगे हैं। दूर दूर से विद्यार्थी यहाँ पढ़ने के लिये आते है। जोधपुर को सीए कि खान कहा जाता है। पूरे भारत में सबसे ज्यादा सीए यहीं से निकलते है। शिक्षा के लिये यहां पर विकल्प मौजूद है। यहाँ विश्व प्रसिद्ध भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान , राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय, एम्स, काजरी, आफरी, डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन राजस्थान आयुर्वेद विश्वविद्यालय, कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर' राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान सरदार पटेल पुलिस विश्वविद्यालय स्थित है। इनके अलावा जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय तथा साथ ही बालिकाओं के कमला नेहरू महिला महाविद्यालय कॉलेज है। जोधपुर में लगभग हर गांव में विद्यालय है।[13,14]

परिणाम

उत्कृष्ट हस्तशिल्पों के समृद्ध संग्रह का रंगीन प्रगर्शन देख कर जोधपुर के बाजारों में खरीददारी करना एक उत्साहपूर्ण अनुभव है। बंधेज का कपड़ा , कशीदाकारी की हुई चमड़े, ऊँट की खाल, मखमल आदि की जूतियां आकर्षक रेशम की दरियां मकराना के संगमरमर से बने स्मृतिचिन्ह, उपयोगी व सजावटी वस्तुओं की विस्तृत किस्में आदि इन बाजारों में पाई जाती हैं।

अनगिनत त्योहारों , समृद्ध अतीत और शाही राज्य की संस्कृति का उत्सव मनाते हैं। वर्षा में एक बार विशाल पैमाने पर मारवाड़ समारोह भी मनाया जाता है। जोधपुर को राजस्थान की न्यायिक राजधानी कहा जाता है, राजस्थान का उच्च न्यायालय भी जोधपुर में ही स्थित है। जोधपुर पूरे विश्व से जुड़ने के लिये हवाई अड्डा भी मौजुद है। पूरे राजस्थान के प्रसिद्ध विभाग जैसे मौसम विभाग , नार्कोटिक विभाग सी बी आइ, कस्टम ,वस्त्र मन्त्रालय आदि मौजूद है। प्रवृत्ति मार्गी संत श्री रामलाल जी सियाग द्वारा स्थापित अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर शुद्धरूप से एक आध्यात्मिक संस्था है। यह संस्था गुरुदेव सियाग सिद्धयोग का निःशुल्क प्रचार-प्रसार मानव कल्याण हेतु विश्व स्तर पर कर रही है। इस केन्द्र में एक विशिष्ट प्रकार की सिद्धयोग पद्धति से ध्यान करने पर साधक को ध्यान के दौरान स्वतः ही अनेक प्रकार की यौगिक क्रियाएँ होती हैं, जो साधक के शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक तापों को हर लेती हैं। देश और विदेश से सभी धर्म व जाति के लोग यहाँ गुरुदेव सियाग सिद्धयोग की पद्धति से ध्यान और मंत्र जाप करके असीम शांति एवं सुख का अनुभव करते हैं। जोधपुर में सभी पर्वो को बड़े ही धूमधाम से मनाया जाता है, यहाँ का बेतमार मेला और कागा का शीतला माता मेला बहुत प्रसिद्ध है लोग दूर - दूर से ये मेला देखने आते है। राजस्थान के लोक देवता रामदेव पीर का मसुरिया मेला भी काफी प्रसिद्ध है।[15,16]

मारवाड़ उत्सव, नागौर का प्रसिद्ध पशु मेला और पीपाड़ का गंगुआर मेला। यह कुछ महत्वपूर्ण उत्सव है जो जोधपुर में बड़े ही धूम-धाम से मनाया जाते है। यहाँ पर सावन माह की बड़ी तीज और बेतमार मेला विश्व प्रसिद्ध है।

जोधपुर में गणगौर पूजन का भी विशेष महत्व है और इसी उत्सव पर पुराने शहर में गणगौर की झांकियां भी निकाली जाती हैं। धिंगा गवर इसके बाद आने वाला एक आयोजन है इस दिन महिलाऐं शहर के परकोटे में तरह तरह के स्वांग रच कर रात को बाहर निकलती हैं और पुरुषों को बैंत से मारती हैं अपने प्रकार का एक अनोखा त्योहार है। खेजड़ली बिश्नोईयान- जोधपुर से 25 किलोमीटर दूर खेजड़ली बिश्नोई बाहुल्य क्षेत्र हैं दुनिया में पेड़ों की रक्षा के लिए शहीद होने का एकमात्र उदाहरण खेजड़ी ही है यहां पर आज से 300 वर्ष पहले जोधपुर के महाराजा अभय सिंह को अपने महल को बनाने के लिए लकड़ियों की जरूरत हुई तो राजा ने अपने सिपाहियों को लकड़ी लाने के लिए खेजड़ली भेजा शिपाई जब खेजड़ली गांव में आकर खेजड़ी काटने लगे तो वहां के स्थानीय लोगों ने उसका विरोध किया लेकिन वह नहीं माने फिर आस पास के बिश्नोई बाहुली 84 गांव पेड़ों को बचाने के लिए इकट्ठे हो गए सिपाही फिर भी नहीं माने तो लोग पेड़ों के चिपक गए सिपाहियों ने पेड़ों के साथ साथ चिपके लोगों को भी काटना शुरू कर दिया देखते ही देखते 363 लोग शहीद हो गए यह विश्व में एक अनूठा पेड़ों को बचाने का उदाहरण है[17,18]

मेहरानगढ़ संग्रहालय ट्रस्ट भारत का प्रमुख सांस्कृतिक संस्थान और उत्कृष्टता का केंद्र है, जिसकी स्थापना 1972 में मारवाड़-जोधपुर के 36 वें संरक्षक, महाराजा गजसिंहजी ने किले को आगंतुकों के लिए जीवंत बनाने के लिए की थी। इस के निदेशक श्री

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

|| Volume 11, Issue 12, December 2022 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1112085 |

करणीसिंह जसोल थे जिनका एक सड़क हादसे में दुःखद निधन हो गया ।इस संग्रहालय में चित्रों, मूर्तियों व प्राचीन हथियारों का उत्कृष्ट समावेश है।[19,20]

निष्कर्ष

जोधपुर के मोची गली से चमड़े का जूता, रंगीन कपड़ा, टाई, पॉलिश किया हुआ घरेलू सजावटी सामान आदि की खरीददारी की जा सकती है। जोधपुर के मिर्ची बड़े बाहर के देशों में भी निर्यात किये जाते है। यहाँ खासतौर पर दूध निर्मित खाद्य पदार्थों का ज्यादा प्रयोग होता है। जैसे मावा का लड्डू, क्रीम युकत लस्सी, मावा कचौरी, और दूध फिरनी आदि।यहाँ का मिर्ची बड़ा और प्याज कि कचौरी बहुत ही प्रसिद्ध है। भोजन में प्राय यहाँ बाजरे का आटे से बनी रोटियां, जिन्हें सोगरा कहते हैं, प्रमुखता से खाया जाता है। सोगरा किसी भी चटनी, साग आदि के साथ खाया जाता है। जो खाने में स्वादिष्ट होता है। इसी प्रकार छाछ और प्याज भी इसके साथ खाया जाता है।[21,22]

संदर्भ

1. "संग्रहीत प्रति". मूल से 22 दिसंबर 2015 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 11 दिसंबर 2015.
2. ↑ "संग्रहीत प्रति". मूल से 24 नवंबर 2015 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 11 दिसंबर 2015
3. "Jodhpur.nic.in". मूल से 19 फ़रवरी 2012 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 3 जून 2015.
4. ↑ "Jodhpur District Census 2011 Handbook: VILLAGE AND TOWN WISE PRIMARY CENSUS ABSTRACT (PCA)" (PDF). Censusofindia.gov.in. पृ° 33. मूल से 28 अप्रैल 2016 को पुरालेखित (PDF). अभिगमन तिथि 19 April 2016.
5. ↑ "Census of India : Provisional Population Totals Paper 1 of 2011 : Rajasthan". मूल से 2 अक्तूबर 2014 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 3 जून 2015.
6. ↑ Gopal, Madan (1990). K.S. Gautam (संपा°). India through the ages. Publication Division, Ministry of Information and Broadcasting, भारत सरकार. पृ° 178.
7. ↑ www.dailymail.co.uk/travel/article-2562228/Lonely-Planet-reveals-10-extraordinary-places-stay-2014.html
8. ↑ "संग्रहीत प्रति". मूल से 11 जनवरी 2015 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 3 जून 2015.
9. ↑ https://iitj.ac.in/
10. ↑ http://www.nlujodhpur.ac.in/index-main.php
11. ↑ http://www.cazri.res.in/hindi/origin.php
12. ↑ "संग्रहीत प्रति". मूल से 18 मई 2022 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 29 मार्च 2022.
13. ↑ https://www.aujodhpur.ac.in/
14. ↑ https://www.nift.ac.in/jodhpur/
15. ↑ https://www.policeuniversity.ac.in/
16. ↑ http://www.jnvu.co.in/department/k-n-college-for-women/
17. ↑ LLC, Books; LLC, General Books (2010). Jodhpur: Mehrangarh Fort, Jodhpur Group - Malani Igneous Suite Contact, Gramin Vikas Vigyan Samiti, Umaid Bhawan Palace, Jodhpurs, Jodhpur (अंग्रेज़ी में). General Books LLC. आईएसबीएन 9781156511275. मूल से 14 जुलाई 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 14 जुलाई 2018.
18. ↑ Kapoor, Subodh (2002). The Indian Encyclopaedia: Indo-Pak War-Kamla Karri (अंग्रेज़ी में). Cosmo Publications. आईएसबीएन 9788177552690. मूल से 14 जुलाई 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 14 जुलाई 2018.
19. ↑ Lodha, Deepika; Patel, Ashok Kumar; Shekhawat, N. S. (2015). "A high-frequency in vitro multiplication, micromorphological studies and ex vitro rooting of Cadaba fruticosa (L.) Druce (Bahuguni): a multipurpose endangered medicinal shrub". Physiology and Molecular Biology of Plants. 21 (3): 407–415. आइएसएसएन 0971-5894. डीओआइ:10.1007/s12298-015-0310-6. अभिगमन तिथि 14 जुलाई 2018.
20. ↑ Gupta, Shobhna (2003). Monuments of India (अंग्रेज़ी में). Har-Anand Publications. आईएसबीएन 9788124109267. मूल से 14 जुलाई 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 14 जुलाई 2018.
21. ↑ "राठौड़ राजाओं का समाधि स्थल जसवंत थड़ा". मूल से 12 अप्रैल 2017 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 5 मई 2017.
22. ↑ राजस्थान पत्रिका. "पहाडियों के आंचल में शानदार पर्यटन जसवंत थडा". अभिगमन तिथि 5 मई 2017.

INNO SPACE

SJIF Scientific Journal Impact Factor

Impact Factor: 8.118

doi crossref

ISSN INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

निस्केयर NISCAIR

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

9940 572 462 6381 907 438 ijirset@gmail.com

Scan to save the contact details

www.ijirset.com